अभिराज डॉ० राजेन्द्र मिश्र

वाग्वधूटी





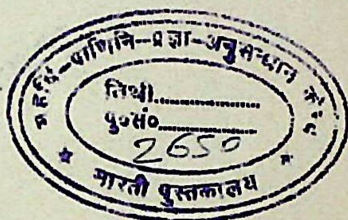
12·3





वाग्वधूटी

(सुरगवीगीतिसङ्कलनम्)



समुपायनीकरोति

मिश्रोऽभिराजराजेन्द्रः

प्रयागविश्वविद्यालयीयसंस्कृतविभागे
प्रवक्तृपदमलङ्कुर्वाणः



अक्षयवट प्रकाशन

८ बाघम्बरी मार्ग, इलाहाबाद

वाग्वधूटी

(संस्कृतगीतसंग्रह)

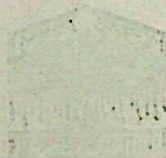


प्रकाशक :

© अक्षयवट प्रकाशन
८ बाघम्बरी मार्ग, इलाहाबाद

प्रथम संस्करण, १९७८ ई०

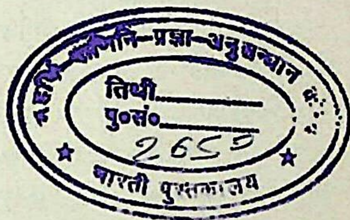
मूल्य :
सामान्य संस्करण : अठारह रुपये
पुस्तकालय संस्करण : बाईस रुपये



मुद्रक :
शुभचिन्तक प्रेस
३१३ बस्की खुर्द, दारागंज
इलाहाबाद–६

VĀGVADHOOTEE

(An Anthology of the Original Sanskrit Lyrics)



By

ABHIRĀJA Dr. RĀJENDRA MISHRA
Lecturer in Sanskrit
University of Allahabad.



Akshayavata Prakashan
PUBLISHERS AND DISTRIBUTORS OF SANSKRIT BOOKS

8 Baghambari Road, Allahabad.

VĀGVADHOOTEE

(A collection of Sanskrit Lyrics)



Published by :
© AKSHAYAVATA PRAKASHAN
8 Baghambari Road, Allahabad.

First Edition : 1978

Price :
General Edition : Eighteen Rupees.
Library Edition : Twentytwo Rupees.

Printed by :
SHUBHACHINTAK PRESS
313 Baskikhurd Daraganj, Allahabad-6.

नेपथ्यवाक्

त्रिमुनिचरणनखधूलिं शिरसि निधाय कवित्रयञ्च नत्वा ।
कृतबुधजनानुरागं वाङ्मधुपर्कमिमं प्रस्तौमि !!

मुक्त छन्दों में संस्कृत-गीत लिखना, मैंने सन् १९६० के ग्रीष्मावकाश में प्रारम्भ किया । १२वीं कक्षा की परीक्षा हो चुकी थी, मै पूर्णतः निश्चिन्त था । परन्तु तकनीकी तौर पर न तो मुझे छन्दरचना की विधि ज्ञात थी और न ही उसकी सूक्ष्मताएँ ! मुझे केवल लय का अनुभव था । बस, उसी लय को प्रमाण मान कर मैं शिखरिणी, द्रुतविलम्बित तथा उपजाति-प्रभृति छन्द लिख लेता था ।

मुक्तगीतों का जन्म भी ऐसी ही अबोध-छलनाओं के वातावरण में हुआ। सिने-गीतों की तर्जें और धुनें ही मेरी गीतिकाओं का गुरु बनीं—और इस प्रकार सत्रह-अठारह वर्ष के एक अबोध-विक्लव व्यक्तित्व में प्रस्तुत गीतकार ने जन्म लिया । अपनी प्रथम रचना का प्रारम्भिक अंश, अविकल रूप से प्रस्तुत कर रहा हूँ :

गीतरामचरितम्

(राजेन्द्र, भावी स्नातक) वैशाख १९६०

समर्पणम्

पितृव्याय गुणौघाय मरालव्रतचारिणे ।
वाणिहाराय पुण्याय संग्रहोऽयं समर्प्यते !

—राजेन्द्र शर्मा, द्वादशकक्षास्थः

मङ्गलाचरणं तावत्

रक्षति यः सर्वदा भक्तान् ददाति शक्तिं निर्मलाम् ।
रघुवंशावतंसं तं श्रीरामं नमाम्यहम् ॥

× × ×

हनुमन्तं शङ्करं ध्यात्वा गत्वा सीतापदं पुनः ।
रामायणस्य कतिपयांशानामनुवादं करोम्यहम् ॥

निशिचरहन्तारं शुभागारं ऋषीणां मैथिलिभर्तारं हनुमता सेवितञ्च।
रघुकुलवनसिंहं सत्यसन्धं सुरेन्द्रं निजहृदि निवसन्तं रामचन्द्रं नमामि ॥
अनुचरति विपत्तिः प्रतिपदं मां सदैव प्रतिक्षणं स्मरामि जानकीशं भवन्तम् ।
विवशोऽस्मि तथा च प्रेरितो मायया ते कुरु कृपामिदानीं भक्तचिन्तामणे हे !!

दशरथगृहे रामावतरणम्

झङ्कृतवीणा भवति सुक्रीडा
नृपदशरथभवनागारे सखि ! अवलोकय दृश्यमिदम् !!
अतिविभूषिता पुरी अयोध्या सरयूतटरमणीयम् ।
यदावलोकयामि प्रासादं विस्मरामि स्वशरीरम् !!

× × ×

श्लोकों तथा मुक्तगीतों की इसी शर्करिला भावभूमि से यात्रा प्रारम्भ कर 'मध्येपथम्' तक आ पहुँचा हूँ। पहले तो मेरा कवित्व-क्षुप अपनी सहज जिजीविषा का पाथेय लेकर बढ़ता रहा और बाद में इसे जीवन की विसंगतियों तथा सुखों-दुखों का 'उर्वरक' भी मिलने लगा। फलतः 'सारस्वत-शस्य' की समृद्धि हुई और 'वाग्वधूटी' को अवगुण्ठन खोलना ही पड़ा !

प्रयाग विश्वविद्यालय में अध्ययन तथा अध्यापन की क्रमजीवी अवधि में मेरी 'काव्य-त्रिवेणी' (संस्कृत, हिन्दी तथा भोजपुरी) निरन्तर विकसित होती रही। श्रद्धेय जानकीवल्लभ शास्त्री एवं पण्डित प्रभात शास्त्री के मुक्तगीतों से भी यहीं परिचय हुआ और इसी परिप्रेक्ष्य में पहली बार मैंने अपनी 'मुक्तगीत-रचनाक्षमता' का सहज अनुभव किया।

२२ जनवरी ६९ की रात्रि में, दिल्ली के दीवानहाल में आयोजित संस्कृत कविसम्मेलन में पहली बार मैंने अपनी गीतिका (मधुरं विचिन्तयामः) प्रस्तुत की। सम्मेलन के उद्घाटनकर्ता महामहिम उपराज्यपाल श्री आदित्यनाथ झा तथा अध्यक्ष डॉ० मेनकर थे। उस समारोह में मुझे अप्रत्याशित रूप से प्रभूत साधुवाद, आशीर्वाद एवं यश प्राप्त हुआ। मेरा आत्मविश्वास तथा कारयित्री प्रतिभा का मूलधन परिपुष्ट हो उठा और मैं हिन्दी-भोजपुरी से कहीं अधिक संस्कृत गीतों के प्रणयन में दत्तचित्त हो गया।

परन्तु मैंने 'गीत के लिये गीतरचना' (Lyric for lyric's sake) कभी नहीं की। मेरी गीतरचना का एकमात्र लक्ष्य था—आम जनता को तथा विशेषरूप से शिक्षित जनसमुदाय को संस्कृत-गीतों की सम्प्रेषणीयता, सरलता, सरसता, समसामयिकता तथा लोकधर्मिता से सुपरिचित एवं आस्थालु बनाना। मेरा यह भी लक्ष्य था कि लोग हठवादिता छोड़ कर संस्कृत के प्रति अपना दृष्टिकोण बदलें और उसे निरवधि-जीवन्त जनवाणी स्वीकार करें।

मैं ज्योतिष्पुञ्ज मार्तण्ड तो नहीं, किन्तु वाणीमन्दिर का लघुदीप अवश्य हूँ। मुझे प्रकाश बिखेरने के लिये जो वातावरण चाहिये था, दुर्भाग्य से मिला नहीं। स्नेह के अभाव में बुझते-बुझते बचा हूँ, वर्तिका बदलने में प्राणभय का निरन्तर अनुभव करता रहा हूँ, ज्योति में अनायास मरमिटने वाले शलभों की प्राणव्यथा का दायित्व एवं कलंक भी भोगता रहा हूँ और अन्ततः आँधियों एवं तूफानों से सदैव जर्जर होता रहा हूँ। परन्तु मैं बुझा नहीं, बुझाया भी नहीं जा सका अब तक! एक ही कोने में सही, जहाँ भी रहा—मैंने उजाला किया।

गंगानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ प्रयाग तथा रवीन्द्रालय लखनऊ में मैंने ठेठ मिर्जापुरी कजली और गजल प्रस्तुत की। इन शब्दों की स्वयं-कल्पित व्याख्यायें भी मैंने सहृदयों के समक्ष रखीं। मेरे मित्रों, प्रशंसकों तथा साहित्यमर्मज्ञों को मेरे प्रयत्नों से हार्दिक प्रसन्नता हुई, बहुतों के आशीषभरे पत्र भी मेरे पास आये। जब उचित परिश्रम का उचित पुरस्कार प्राप्त होने लगता है तब साधक को न नियति से कोई शिकायत होती है, न नियति-नियमित किसी व्यक्ति से! सचमुच, अपनी सारस्वत-साधना में मुझे किसी से कोई शिकायत नहीं है। अपने परिश्रम के अनुपात में कहीं अधिक पारितोषिक मुझे सदैव मिला।

वाग्वधूटी के माध्यम से लगभग ५५ गीतों का यह संग्रह काव्यरसिकों के करकमलों में समर्पित कर रहा हूँ। इस संग्रह में चैता (चैत्रकम्) कहँरवा (स्कन्धहारीयम्) गज़ल (गलज्जलिका) कजली (कजरी) तथा सोहर (सूति-गृहम्) जैसे लोकगीत अपने सहज रूप में अवतरित मिलेंगे। लय-धुन अथवा गलेबाजी के बल पर किसी गीत को 'लोकगीत' के साँचे में नहीं ढाला गया है, बल्कि उन्हें उनकी पूर्ण जीवन्तता, सहजता तथा मात्रिक छन्दों की नियमबद्धता के साथ प्रस्तुत किया गया है।

वाग्वधूटी के गीत राष्ट्रप्रेम, प्रकृति-चित्रण, लोकचित्रण तथा सामान्य मनोभावों के साथ हो साथ मेरी 'जीवन-व्यथा' से भी जुड़े हैं। डायरी में प्रत्येक गीत की तिथि और रचनावेला अंकित है। वे तिथियाँ और वे वेलायें मेरी जीवन-यात्रा का पड़ाव बन कर रह गई हैं। गीतों के सहयात्री तो 'सुवर्णभूमि' (Eldorado) के मोह में औरों के साथ हो लिये, परन्तु मेरा 'गीतपथिक' अभी भी इन गीतों के माध्यम से 'चिरसंस्तुत पथ' पर (Trodden ways) सञ्चरण कर रहा है।

गीतसंग्रह के प्रकाशनार्थ, अक्षयवट-प्रकाशन, इलाहाबाद (जिसका भागीदार मैं स्वयं भी हूँ) के स्वत्वाधिकारी, अपने छोटे भाई चिरञ्जीवी सत्यव्रत मिश्र को हृदय से आशीर्वाद देना चाहता हूँ, क्योंकि 'वाग्वधूटी' की पाण्डुलिपि बनाने तथा प्रूफ पढ़ने के अतिरिक्त मैंने इसमें एक धेले का भी काम नहीं किया है। मुखपृष्ट की सज्जा के लिये प्रिय मित्र श्री महमूद अख्तर (भूगोल-विभाग, प्र० वि० विद्यालय) को तथा मुद्रणहेतु डॉ० पाण्डे एवं श्री गिरि जी को भी हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

९ दिसम्बर ७८ ई०
वैजयन्त
८ बाघम्बरी रोड, प्रयाग।

सहृदयाधीन
राजेन्द्र मिश्र

वाग्वधूटी

माङ्गल्यमेव भूयात् !!

मधुरं विचिन्तयामो मधुरं हि मानसे स्यात्
मधुरे तु जीवनेऽस्मिन् माधुर्यमेव भूयात् !!

कलहादिकेन किं स्यात्
विरहादिकेन किं स्यात्

सङ्गममये हि लोके सायुज्यमेव भूयात्
मधुरे तु जीवनेऽस्मिन् माधुर्यमेव भूयात् !!

मन[1] एव बन्धहेतुः
मन एव मोक्षहेतुः

अतएव मानसेऽस्मिन् मासृण्यमेव भूयात्
मधुरे तु जीवनेऽस्मिन् माधुर्यमेव भूयात् !!

केचिद् वदन्ति नीतिम्
केचिद् दिशन्ति भीतिम्

प्रतिपलमहो समेषामायुष्यमेव भूयात्
मधुरे तु जीवनेऽस्मिन् माधुर्यमेव भूयात् !!

---

१. मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोरिति भगवद्गीतायां सुष्ठु निगदितम् ।

स्वजनेषु कोऽपि रागी
विजनेषु कोऽपि रागी
निखिले भवे परं हि तस्यैव[1] दर्शनं स्यात्
मधुरे तु जीवनेऽस्मिन् माधुर्यमेव भूयात् !!

भूयात् स्वराष्ट्रनीतिः
भूयात् स्वदेशगीतिः
प्रतिदिनमहोऽस्मदीयं माङ्गल्यमेव भूयात्
मधुरे तु जीवनेऽस्मिन् माधुर्यमेव भूयात् !!



१. परब्रह्मण इत्यर्थः ।

प्रीतिकरं जीवनं भवेत् !!

नवं नवं प्रीतिकरं जीवनं भवेत्
अहर्निशं भीतिहरं जीवनं भवेत् !!

किसलयसरला स्यान्मृदुभाषा
कुवलयतरला स्यात्सुखदाशा

शुभं शुभं नयनयुगलमीलनं भवेत्
अहर्निशं भीतिहरं जीवनं भवेत् !!

धवलायितगङ्गा चरितानाम्
गगनायितयमुना सुकृतानाम्

द्रुतं द्रुतं सरस्वतीमेलनं[1] भवेत्
अहर्निशं भीतिहरं जीवनं भवेत् !!

नन्दनवनमिव स्यात्सुविभुत्वम्
वेणुरणनमिव वाङ्मधुरत्वम्

श्रुतं श्रुतं स्मृतिप्रभं प्रेरणं भवेत्
अहर्निशं भीतिहरं जीवनं भवेत् !!

●

१. धवलायितगङ्गया गगनायितयमुनया च सार्धं सरस्वतीमेलनं भवितुमर्हत्येवेति पुराणपरम्परा। सुचरिताः सुकृतवन्त एव कतिपये सत्पुरुषाः सारस्वताः सम्यक्तया भवन्तीति कविना अभिधेयाधिकं सङ्केत्यते।

तवाभिरामं कवित्वगीतम् !!

गतेऽपि काले धरालवाले
जलायमानं रसार्द्रशीतम् !
सुशोभतेऽलं न किं प्रकामं
तवाभिरामं कवित्वगीतम् !!

सुधेव देवं रमेव रामम्
शचीव वज्रिणमुमेव शम्भुम्
पुनाति सुकवे ! विलोललोकं
हृदीरितं प्रेरणाप्रणीतम्
तवाभिरामं कवित्वगीतम् !!

सुवाङ्मयं व्यञ्जनाऽतिगम्यम्
निरत्ययं वेदनाऽतिरम्यम्
करोति भव्यं सदाऽतिनव्यं
पिकायमानं निलीय पीतम्
तवाभिरामं कवित्वगीतम् !!

क्व धेनुसेवा क्व वंशवृद्धिः
क्व यक्षदैन्यं क्व मेघसिद्धिः
त्वयैव सुकवे ! शुभं समेषां
चिरन्तनं चिन्तितं विनीतम्
तवाभिरामं कवित्वगीतम् !!

भवातिगं यत् त्वदीयचरितम्
मनोऽतिगं यत् त्वदीयकलितम्
असंशयं धीग्रहक्षमं तत्

क्रृतं त्वया यन्मुदीपरीतम्[१]
तवाभिरामं कवित्वगीतम् !!

समीरणोऽयं प्रवाति यावत्
कलाऽपि चान्द्री विधौ यथावत्
जयन्तिकेयं विभाति तावत्[२]

न कालिदासामृतं व्यतीतम्
तवाभिरामं कवित्वगीतम् !!



---

१. चन्द्रिकामण्डितम् रसास्वादनक्षममित्यर्थः ।

२. २६ नवम्बर सन् ६६ ई० तिथौ विश्वविद्यालयीयछात्रसंघभवने समायोजिते कालिदासजयन्त्युत्सवे गीतमिदं पठितमिति विशेषः ।

अयि मम हृदन्तरवेदने !!

अयि मम हृदन्तरवेदने ! क्रुधमीदृशं कुरुषे कथम् !!
समुपासिताऽसि मयैव किम्
सुभगीकृताऽसि मयैव किम्
अयि गगनगोचरजल्पने ! पदमीदृशं लभसे कथम् !!
गतमेव सम्प्रति वैभवम्
हृतयौवनं हृतशैशवम्
अयि तूलिकाऽहृतकल्पने ! सुखमीदृशं तनुषे कथम् !!
मधुरं प्रवाति न चानिलः
मधुरं विरौति न कोकिलः
अयि निष्कृतिदुर्व्रतपारणे ! श्रममीदृशं कुरुषे कथम् !!
विदधासि किं कटुकैतवम्
न ददासि यज्जननान्तरम्
अयि निशितदारुणलोचने ! क्षतमीदृशं सहसे कथम् !!
न बिभेमि बन्धनपाशतः
न बिभेमि पापविपाकतः
अयि वितथमन्थनधारणे ! स्वयमेव संहरसे कथम् !!
अयि मम हृदन्तरवेदने ! क्रुधमीदृशं कुरुषे कथम् !!



श्रीमन्तमेव भजामहे !!

श्रीमन्तमेव भजामहे प्रतिपलमनाथपुरन्दरम्
वरवेणुवादनसुन्दरं कलिजलधिमन्थनमन्दरम् !!

नवनीरनीरदनीलतनुतनुजनितशाद्वलवैभवम्
निश्शेषदुष्कृतसुकृतगणकृतमसृणमङ्गलकैतवम् !!

मुचकुन्दहृदयङ्गमितछविसमरूपसद्गुणमन्दिरम्
श्रीमन्तमेव भजामहे प्रतिपलमनाथपुरन्दरम् !!

अतिसुभगनयनविलासलास्यललामहृतकटुपापकम्
स्मितमधुरवदननिशीथिनीशमहर्निशं नु दुरापकम् !!

बलसान्द्रकपिनिकुरम्बनिर्जितकठिनदशमुखसङ्गरम्
श्रीमन्तमेव भजामहे प्रतिपलमनाथपुरन्दरम् !!



स्मरामि सौख्यकरम् !!

स्मरामि सौख्यकरं सन्ततं विपाकहरम्
व्रजेशमीतिहरं गोपिकाप्रतीतिकरम् !!

न यस्य जन्मजरावेदनं न मृत्युभयम्
न यस्य कामगतं प्रेरणं विलूनदयम्

स्मरामि मौढ्यहरं भक्तभावतोषकरम्
व्रजेशमीतिहरं गोपिकाप्रतीतिकरम् !!

क्व वल्लवीषु कृतं लोकमङ्गलं नटनम्
क्व चापि वंशकथा द्वारकापुरेऽनुदिनम्

स्मरामि पार्थसखं योधनं सुवीरवरम्
व्रजेशमीतिहरं गोपिकाप्रतीतिकरम् !!

न येन राज्यपदं क्वापि वैभवाय हृतम्
न चापि राष्ट्रहितं स्वार्थसाधनाय कृतम्

स्मरामि चौर्यचरं द्वापरैककीर्तिधरम्
व्रजेशमीतिहरं गोपिकाप्रतीतिकरम् !!



क्व गता प्रिये त्वदीया प्रीतिः ?

क्व गता प्रिये ! त्वदीया प्रीतिः
मम जीवनाय रम्या गीतिः !!

मधुरभाषणं तदमृतसारम्
नयनवीक्षणं विकलितमारम्

अयि शोभने ! क्व याता रीतिः
मम जीवनाय रम्या गीतिः !!

निशितपीडनं किमिव न भुक्तम्
मया तव कृते किमिव न युक्तम्

तदपि प्रभाङ्गि ! छिन्नाऽप्रीतिः
मम जीवनाय रम्या गीतिः !!

त्वमतिकैतवं कलयसि चित्ते
न खलु मानसं रमयसि मित्ते

अयि तूलिके ! गता ते स्फीतिः
मम जीवनाय रम्या गीतिः !!



गौरवं तदेव !!

गौरवं तदेव येन दुर्गुणोऽपि जीयते
मानवेन मानवाय बन्धुताऽनुभूयते !!

यश्चरत्यनारतं स एव विन्दते फलम्
यश्च वीतपौरुषो न तस्य जीवनं कलम्

योऽनुयाति साहसं स एव साधु गीयते
यश्च कुब्जकैतवं स निन्दया विलीयते !!

सर्वमेव राजते भुवि प्रभूतमात्रकम्
दृश्यते सुधा क्वचित्क्वचिच्च लूनयात्रकम्[1]

लोकमङ्गलं विहाय शातनं विधीयते
आत्मशौर्यसम्पदैव शासनं प्रभूयते !!

मानसी यथेरणा तथैव भाति वैखरी
तिन्तिडीफले क्व सा रसालमञ्जुमाधुरी

काव्यकौशलं निपीय पानकं[2] प्रणीयते
सोऽपि कौशलप्रभुः[3] प्रमादिना न चीयते !!

सर्वमेव सार्थकं यदभ्युपैति भूतलम्
यच्च सार्थकं तदेव भङ्गुरं विचञ्चलम्

---

१. लूना छिन्ना यात्रा जीवनव्यापारो येन तत् । विषमित्यर्थः ।
२. एलागुडमरिचलवङ्गादिनिर्मितो विलक्षणस्वादो रसविशेषः ।
३. कविरित्यर्थः ।

ज्ञानिना तथाऽप्यलं सदेव सम्यगीयते
राजहंसगौरवेण दुग्धमेव पीयते !!

यत्र लोकसंस्तवो बभूव हन्त तेन किम्
जीवनं मृषा कलङ्कितं बभूव तेन किम्

श्रीवरस्य शासने न पुण्यमेव मीयते
पीतलोकवाग्विषोऽपि शम्भुनोपमीयते !!

त्याजितोऽल्पशैशवे कथं पितेव शाल्मलि:
केन बन्धुना निवारित: पदे-पदे कलि:

केन शूद्रकेण रे सभाजनं प्रदीयते
कन्यया कथा शुकोऽयमात्मनोपनीयते !!



वन्दे सदा स्वदेशम् !!

गङ्गा पुनाति भालं रेवा कटिप्रदेशम्
वन्दे सदा स्वदेशम्
एतादृशं स्वदेशम् !!

काशीप्रयागमथुरावृन्दाटवीविशालाः
द्वारावतीसुकाञ्चीविदिशादितीर्थमालाः

सम्भूषयन्ति कामं यस्य प्रशान्तवेषम्
वन्दे सदा स्वदेशम्
एतादृशं स्वदेशम् !!

सलिलं सुधामधुरितं पवनोऽपि गन्धवाही
चरितं विकल्पकलितं धर्मो दयावगाही

यत्प्राङ्गणं शबलितं कौतूहलैरशेषम्
वन्दे सदा स्वदेशम्
एतादृशं स्वदेशम् !!

गायन्ति यस्य देवाश्शुभगीतकानि नित्यम्
सर्वे भवन्तु सुखिनो यस्यैतदेव कृत्यम्

अभयप्रदोपदेशाः शमयन्ति पापलेशम्
वन्दे सदा स्वदेशम्
एतादृशं स्वदेशम् !!

अचला नु देवताऽऽत्मा वसुधाऽपि रत्नगर्भा
कुलिशायते यदस्थि प्रचुरं वनी सुदर्भा

केचिन्नमन्ति गिरिजां केचिच्च शालुवेशम्
वन्दे सदा स्वदेशम्
एतादृशं स्वदेशम् !!

अद्यापि यस्य नीतिर्विस्मापयत्यनल्पम्
उद्घोष्य विश्वशान्ति भावञ्च मित्रकल्पम

वन्दे ध्वजं त्रिवर्णं वन्देऽगृहीतकेशम्
वन्दे सदा स्वदेशम्
एतादृशं स्वदेशम् !!



मानिनि ! गणय न खलु मम दोषम् !!

मानिनि ! गणय न खलु मम दोषं
परितोषय मृदुमारम् !
न कुरु विलम्बं यौवनमिच्छति
तव वदनामृतसारम् !!

हृदयमनारतमेति विशरणं श्रितकलरवमतिमात्रम्
दिशि-दिशि वचसि-वचसि ननु पश्यति वयसि-वयसि तव गात्रम्

हंसगृहिणि ! शकलय बिसतन्तून्
प्रशमय निखिलविकारम् !
भवदनुलीनं स्खलितखलीनं
चिन्तय विरहितदारम् !!

जननान्तरसौहृदमथवा हृतयुवजननियमविवेकम्
मृदुलावण्यमतीतधृतिपथं मदयति तव मामेकम्

क्व नु गमनीयं किं करणीयं
यतनीयं किमुदारम् ?
मृद्वीकाऽसि तदपनय कृपया
नियुतगुणितभवभारम् !!

कृतनूतनसंस्खलनमुताहो प्राग्जनिकलुषविपाकम्
भृशमनुभूय शनैरुपयामि प्रचुरविरतिपरिपाकम्

वारय विपदम्भोनिधिमग्नं
तारिणि ! विलुलिततारम् !
द्रुतमभिसर लघु नय सहचरणं
स्वजनमिमं हृतसारम् !!

अयि कुन्देन्दुतुहिनसितवदने सितवसने सितकाये
कुवलयनयनकलितलघुकलनैर्वितरितशतशतमाये

इन्द्रजालयोजिनि ! राजेन्द्रं
सम्भावय सहकारम् !
किन्न मोदयति मुदी शारदी
निशि कैरवकान्तारम् ?



वितथमिदं जननं प्रतिभातम् !!

वितथमिदं जननं प्रतिभातम् !!

छलिता मृगतृष्णया पिपासा
निहता कटुहालया सुखाशा

तैलिकवृषमनुगतं सुयातम्
वितथमिदं जननं प्रतिभातम् !!

अहमहमिकयाऽऽश्रितं न तत्त्वम्,
तत्त्वचिन्तया गतं निजत्वम्

उभयसरणिहीनमनवदातम्
वितथमिदं जननं प्रतिभातम् !!

गीतं तदपि न वाणी प्रीता
पीतं तदपि न तृषा व्यतीता

अप्रियतमं प्रतिपलं जातम्,
वितथमिदं जननं प्रतिभातम् !!

व्यर्थो दशरूपकावलोकः
तेन बभूव जगति को धनिकः

धनञ्जयत्वं पुनरतियातम्[1]
वितथमिदं जननं प्रतिभातम् !!

मृदुलाहितचिन्तयाऽभिराजम्
दहति विधिर्ननु कविपदभाजम्

स्मरः स्मारयति कशाभिघातम्
वितथमिदं जननं प्रतिभातम् !!



१. दशरूपकावलोकेन व्याख्याविशेषेण जगति को धनिकोऽवलोकटीकाकृत् बभूव ? न कोऽपि इत्यर्थः। एवं हि यद्याचार्यधनिक एव समेषां स्पृहाविषयः तर्हि दशरूपकग्रन्थकारस्थ आचार्यधनञ्जयस्य का कथा ? धनञ्जयवैदुषी तु केवलमनुमानविषयः। अपरश्चापि किञ्चिदुत्प्रेक्ष्यते शब्दच्छलमवलम्ब्य। सहृदया एवात्र प्रमाणम्। दशरूप्यकाणामवलोकः दर्शनं व्यर्थः। तेन स्वल्पधनेन जगति को धनिको बभूव ? न कोऽपीत्यर्थः। एवम्भूते सति धनञ्जयत्वं धनकुबेरत्वं तु अनुमानमेवेत्यलम्।

अनुजानीहि कवनकरणाय !!

अनुजानीहि कवनकरणाय !
अम्ब वरटवाहिनि ! वरदायिनि
देहि दिशं निजपदवरणाय !!

कलय हृदयमनिशं भावनया
शमय विलयमचिरं प्रार्थनया

पुत्रीयति मयि वितर विकसनं
भवतु कृपा तव भवतरणाय !
अनुजानीहि कवनकरणाय !!

स्मरसि जननि ! नः स्तनन्धयत्वम्
लघुविक्रमं रुदितविपुलत्वम्

अयि कुन्देन्दुतुहिनवरवसने
सरणिमुपगमय सञ्चरणाय !
अनुजानीहि कवनकरणाय !!

मुरलिकेव मम देहलतेयम्
प्रतिपदमेव छिद्रविकलेयम्

मृदुकलनादमयी स्यान्मातः
तव कृपयाऽऽत्मवशीकरणाय !
अनुजानीहि कवनकरणाय !!

यत्कवयामि तदसि जननि त्वम्
सा प्रतिभाऽपि ययाऽस्ति कवित्वम्

त्वामन्तरा भवामि न किञ्चित्
तनुजस्ते जगदुपकरणाय !
अनुजानीहि कवनकरणाय !!



मातस्तव चरणकमलकृपया !!

अरुणिम्ना सुकृतफलं
धवलिम्ना हृदयतलं
मातस्तव चरणकमलकृपया भवताल्लसितम् !!

प्रार्थनमुत्सर्पि शुभं साधनमभिरामम्
चिन्तनमुद्योतकरं धारणमविरामम्
चन्द्रिकया नयनजलं
मालिकया[1] सहजबलं
मातस्तव चरणकमलकृपया भवतादमृतम् !!

श्रावणघनवर्षणमिव कवनम्मे प्रीतम्
रोदरमृदुगुञ्जनमिव सुखदम्मे गीतम्
इन्दिरया सुखसदनं
गीतिकया मधुवदनं
मातस्तव चरणकमलकृपया भवतान्महितम् !!

एकप्रख्यौ भवतां प्रकटनपरिणामौ[2]
एकप्राणौ भवतां प्रवरधर्मकामौ
वन्दनया व्याहरणं
क्रन्दनया संस्तवनं
मातस्तव चरणकमलकृपया भवताज्जनितम् !!

●

---

१. विजयानन्तरं पुरस्कृतिरूपा माला विजयिनाऽवाप्यत एवेति दिक् ।
२. उदेति सविता ताम्रस्ताम्र एवास्तमेति च
सम्पत्तौ च विपत्तौ च महतामेकरूपता !!

निखिलं जगन्मदीयम् !!

द्विद्विगुणितं तुरीयम्
निखिलं जगन्मदीयम् !!

धरा मदीया नभो मदीयम्
दिशो मदीया जलम्मदीयम्

अखिलं स्थिरम्मदीयम्
निखिलं जगन्मदीयम् !!

गतिर्मदीया फलम्मदीयम्
मतिर्मदीया शुभम्मदीयम्

विपुलं सुखम्मदीयम्
निखिलं जगन्मदीयम् !!

मा परितापय मा परिपीडय
कमपि देहिनम्मा परिकीलय

सहजमेव गमनीयम्
निखिलं जगन्मदीयम् !!



यदवधि कलितमिदं तव रूपम् !!

यदवधि कलितमिदं तव रूपम्
नन्दनवनजविबुधतरुसुममिव निखिलयुवतिमुखभूपम् !!

तदवधि सुतनु ! हृदयहरिणोऽयं ताम्यति भवदनुलीनः
शून्यमुपैति विरौति करुणमिव तपति सततमतिदीनः !!

गणयति न खलु दिवसपरिणमनं नैव च रजनिविभातम्
खादति पिबति चलति न निषीदति गृह्णाति न वरवातम् !!

इन्द्रियनिवहच्छलितपरितोषो रहसि विहितरतिरागः
रूपजलधिजलमज्जितकायः क्वापि न भवति सरागः !!

त्वमसि मृगाक्षि[1] ! मृगान्वयरत्नं यासि न कथमनुकूलम्
यन्नयनेन नयनवर्त्यसि भुवि दहसि तमेव समूलम् !!

शिखरिणि ! शमय विलम्बमनल्पं विरचय नय सदुपायम्
सम्भावय वदनामृतकृपया स्ववशंवदगतमायम् !!



---

१. त्वमसि मृगाक्षी, हरिणाक्षीति । इतस्तावत् मम हृदयहरिणः । हरिणस्याक्षिणीवाक्षिणी यस्याः सा त्वमेवंगुणविशिष्टा तमेव हृदयहरिणं समूलं दहसीति महदाश्चर्यम् ! स्वजातीयेन तु स्वजातीयो रक्षणीय एव न पुनर्दाह्यः ।

मदयत्यनिशं मृदुकं हृदयम् !!

गलदश्रुकथा त्वदपायमरौ प्रसभं निहता न हता जडता
मदिराक्षि ! तव स्मृतिरेव कथं मदयत्यनिशं मृदुकं हृदयम् !!

नयनावधिरेव बभूव रतिः
ननु कण्ठपथातिथिरेव मतिः

हरिणाक्षि ! तवाचरणं तदपि ग्लपयत्यनिशं मृदुकं हृदयम्
मदिराक्षि ! तव स्मृतिरेव कथं मदयत्यनिशं मृदुकं हृदयम् !!

शिवहाससिता तव देहलता
ननु मोहमयी कटुता मृदुता

वरटाक्षि ! तव स्तिमितं नयनं द्रवयत्यनिशं मृदुकं हृदयम्
मदिराक्षि ! तव स्मृतिरेव कथं मदयत्यनिशं मृदुकं हृदयम् !!

त्वदृतेऽयमहं न भवामि शुभे
अणुकं परितोषसुखं न लभे

चटुलाक्षि ! वचस्तव बोधहरं जडयत्यनिशं मृदुकं हृदयम्
मदिराक्षि ! तव स्मृतिरेव कथं मदयत्यनिशं मृदुकं हृदयम् !!



दर्शं दर्शं त्वाम् !!

दर्शं दर्शं त्वामतिहर्षं हृदयं सुतनु जगाम
मलयसततगतिमन्दिरमथवा विधुकिरणानां धाम !!

मनसि सुखदरणरणकं जातम्
पुलकनिकायकरम्बितगात्रम्

कलितपुरन्दरविभवमदृश्यत सार्थकमिव तव नाम
दर्शं दर्शं त्वामति हर्षं हृदयं सुतनु ! जगाम !!

किन्नु कृतं सुकृतं मुद्रिकया
येन धृता खलु साऽनामिकया

नामवताऽपि मया नोऽवाप्तं तव कलकुन्तलदाम[1]
दर्शं दर्शं त्वामतिहर्षं हृदयं सुतनु ! जगाम !!

अयि पाषाणि ! शमय कौलीनम्
स्मर शुभवृत्तं प्राक् कालीनम्

संस्पर्शेण भवसि पतिकामा प्रकटय ननु निजधाम[2]
दर्शं दर्शं त्वामतिहर्षं हृदयं सुतनु ! जगाम !!

---

१. अनामिकया नामहीनयाऽपि मुद्रिका धृता मया पुनर्नामवताऽपि अभिधान-विशेषमण्डितेनापि तवमनोज्ञालकमाल्यं नोऽवाप्तमिति हन्त महद्दुःखम् । विरोधपरिहारे पुनः अनामिकयाऽङ्गुलिविशेषेण मुद्रिका धृतेति सुस्पष्टम् ।

२. पाषाणीति सम्बोधनपदं गोतमर्षिप्रियामहल्यां सङ्केतयति । रघुनन्दनस्पर्शमात्रेणैव पुनरवाप्तशरीराऽहल्या पतिकामा बभूवेति पुराणेषु निगदितम् । ममापि रघुनन्दनीभूतस्य नायकस्य संस्पर्शेण हे पाषाणि ! त्वमुद्बुद्धमनसिजा भवेति व्यङ्ग्यम् ।

मृदुरहमस्मि गगनघनबन्धुः
त्वं मृदुरसि करुणामृतसिन्धुः

मत्वा त्वन्मयमेव जगदयं निखिलं जनो ननाम
दर्शं दर्शं त्वामतिहर्षं हृदयं सुतनु! जगाम !!

ततुं विरहपयोधिविशालम्
शक्नोमि न कथमपि भवजालम्

तदपि तितीर्षा कापि बलवती चेतसि न खलु शशाम
दर्शं दर्शं त्वामतिहर्षं हृदयं सुतनु! जगाम !!



ईदृक् पिनाकपाणिं वन्दे !!

हालाहलमपि पायं पायं जगदमृतमयं विभयङ्करोति
शङ्करपदवीमप्यारूढः कल्पस्यान्ते प्रलयङ्करोति !!

दुरमङ्गलवेषधरोऽपि शुचिः
अभिरुचिहीनोऽपि विचित्ररुचिः
ईदृक्पिनाकपाणिं वन्दे
ईदृक्त्रिशूलपाणिं वन्दे !!

यः सन्नपि भूतपतिर्निस्स्वस्त्यक्ताहारोऽपि च पञ्चमुखी
कन्दर्पविनाशकृदपि नित्यं तुहिनाचलसुतया परमसुखी

दाता सन्नपि यो दिगम्बरः
मुण्डी तुण्डी ननु भवम्भरः
ईदृग् विचित्ररूपं वन्दे
ईदृक्पवित्रभूपं वन्दे !!

प्रतिपलं क्षालयतितरामहो गङ्गा यत्कज्जलजटाऽटवीम्
वाहनवर्मणि युक्तो नन्दी विधुलेखाऽऽप्नोति किरीटच्छविम्

गणपतिस्तनूजो सेनानी
जाया करुणार्द्रा रुद्राणी
ईदृङ्निधानमूलं वन्दे
ईदृग् विधानकूलं वन्दे !!

कथं खलु धारये !!

महानसधूमतामेति प्रिये ! मम कौशलं निखिलम् !!

भृशं मलिनायते नयनम्
गरलविशिखायते शयनम्

सुहासिनि ! छिन्धि सम्प्रति बन्धनं संशयततीजटिलम्
महानसधूमतामेति प्रिये ! मम कौशलं निखिलम् !!

अमोदा शर्वरी जाता
न चन्द्रोऽप्यस्ति यत्त्राता

त्वमेवैका नु माणवकं सभाजय मां तृषातरलम्
महानसधूमतामेति प्रिये ! मम कौशलं निखिलम् !!

न ते पवनेऽपि सन्देशः
न वा प्रकृतौ लसद्वेषः

कथं खलु धारये सुभगे ! वृथाऽऽत्मानं व्यथाविरलम्
महानसधूमतामेति प्रिये ! मम कौशलं निखिलम् !!



स्कन्धहारीयम् (भाति !![1])

नभसि विभाति चमत्कृतचन्द्रो भाति चन्द्रमसि छाया
सरसि विभाति सरागकमलिनी कमलिन्यामलिजाया

भाति भवने वधूटी षोडशी सदङ्गना
भाति गगने मुदी सतारका निरञ्जना !!

क्षणे क्षणे यन्नवतोपेतं प्रभवति तदेव रूपम्
क्षणे क्षणे यज्जडतोपेतं भवति तदेव विरूपम्

भाति विजने वसन्तकलकण्ठीवन्दना
भाति भवने वधूटी षोडशी सदङ्गना !!

प्रीतिस्सा बध्नाति नायक हरिणं या वागुरया
भीतिस्सा या कृन्तति हृदयं बद्धा भिया विधुरया

भाति कवने विलक्षणा विरूढा व्यञ्जना
भाति भवने वधूटीं षोडशी सदङ्गना !!

---

१. लोकप्रचलितं स्कन्धहारीयमिदम्। वरयात्रादिप्रसङ्गे शिविकां वहद्भिस्सेवकैः स्वश्रमापनोदनार्थं यद्गीतं समवेतस्वरैः मध्येपथं गीयतेऽद्युत्तरप्रदेशं तदेव भवति स्कन्धहारीयमिति मदुत्प्रेक्षणम्।
लोकभाषायामेतदेव कँहरवा इत्युच्यते। गीतमिदं स्कन्धहारैरेव केवलं गीयतेस्म प्राक्तनयुगे तस्मादेव स्कन्धहारीयमित्याख्या।

देहे भाति मनो दुर्ललितं प्रीतिर्मनसि विभाता
प्रीतौ निष्ठा भाति पुराणी, सैव पिता सा माता

भाति नयने दिशा प्रतीची मञ्जुदर्शना
भाति भवने वधूटी षोडशी सदङ्गना !!

अमृतं वर्षति नयनपयोदो हृदि जनयत्यनुरागम्
अनुरागोऽयं सृजति युगलकं सुखमन्दिरमविभागम्

भाति हवने हिरण्मयी हरेस्समर्चना
भाति भवने वधूटी षोडशी सदङ्गना !!



कुम्भकारः=कुम्हार/कोंहार, स्वर्णकारः=सुनार/सोनार, चर्मकारः=चमार इतिवदेव स्कन्धहारः=कन्धहार=कंधार=कँहार इत्यपि निष्पन्नो भवति। विद्वांसोऽत्र प्रमाणम्।

हृदयेन किन्न सोढम् ?

हृदयेन किन्न सोढं गरलायितं त्वदीयम्
नयनेन किन्न सोढं शबलायितं त्वदीयम् !!

विकला निशा व्यतीता विकलं दिनं व्यतीतम्
अवलोकितं नु सर्वं विपदग्निना परीतम्

दूरीबभूव सौख्यं पीयूषजं मदीयम्
मनसैव किन्न सोढं गगनायितं[1] त्वदीयम् !!

अङ्के निधाय चन्द्रं रजनी बभूव राका
पवनं निधाय शीर्षे दोधूयते पताका

लक्ष्यं ययौ समेषां परिपूरणं तदीयम्
कृपणेन किन्न सोढं कृपणायितं त्वदीयम् !!

विगतो वसन्तकालो मलयानिलोऽपि यातः
अवधिः प्रतीक्षणानां प्रलयावधिस्तु जातः

गलितं मरन्दवृत्तं पलिता लतावलीयम्
मधुपेन किन्न सोढं कुटिलायितं त्वदीयम् !!

---

१. शून्यीभाव इत्यर्थः ।

अयमेव मे सुमेरुः कल्पद्रुमोऽप्ययम्मे
अयमेव मेऽन्तरात्मा स्वर्गाश्रमोऽप्ययम्मे

आलिङ्गितिस्म दीपं मत्वेति शं स्वकीयम्
शलभेन किन्न सोढं प्रलयायितं त्वदीयम् !!

आकर्ण्य वेणुनादं विस्मृत्य कृत्यजातम्
अपहाय वैभवं स्वं कुञ्जं वनं प्रपातम्

विश्वस्य यत्सगन्धं पदमाययौ त्वदीयम्
हरिणेन किन्न सोढं वधिकायितं त्वदीयम् !!



त्वामेकमेव जाने !!

भवसागरं न जाने भवतारणं न जाने
त्वामेकमेव जाने त्वामेकमेव जाने !!

तरणी न वर्तते मे धरणी न वर्तते मे
शरणं न विद्यते मे मरणं न विद्यते मे

आत्मानमेव सर्वं भवतोऽपरं न जाने
त्वामेकमेव जाने त्वामेकमेव जाने !!

कुत आगतोऽस्मि भूमौ कस्मात् कदा किमर्थम्
विकलेन्द्रिये शरीरे क्रियदस्त्यहो मदर्थम्

समधीत्य सर्वशास्त्रं न तदेव साधु जाने
त्वामेकमेव जाने त्वामेकमेव जाने !!

ब्रह्मासि सृष्टिमूलं वैशेषिके विशेषः
न्याये त्वमीश्वरोऽसौ सांख्येऽप्यसङ्गवेषः

तदपि त्वदीयरूपं मुरलीधरं विजाने
त्वामेकमेव जाने त्वामेकमेव जाने !!

वचनीयता गता मे दृष्ट्वा तवाधिकरणम्
ननु दीनता मृता मे दृष्ट्वा तवैकशरणम्

जननं स्थितिं प्रयाणं त्वामन्तरा न जाने
त्वामेकमेव जाने त्वामेकमेव जाने !!

न तथा बिभेमि लोकाद् यदि वा पतामि पङ्के
इदमेव याचनम्मे प्रभवान्यहं त्वदङ्के

पितरं सखायमिष्टं स्वजनोत्तमं नु जाने
त्वामेकमेव जाने त्वामेकमेव जाने !!



मधुकरीयम् !!

नलिनदलनिलीना वसति मधुकरीयम्
मृदितमधुरलीला स्मरति शं स्वकीयम् !!

करुणकटुनिदाघे दर्शिता येन रीतिः
अपर इव स कान्तो मल्लिकाऽऽबद्धगीतिः

दयितसुखविहीना विगणयति तदीयम्
मथितमदनलीला स्मरति शं स्वकीयम् !!

तरुषु न दलजालं वल्लरी नो लतायाम्
नभसि न च हिमांशुः कौमुदी नो निशायाम्

विपदुदधिविलीना भवति भवदरीयम्
शमितगमनलीला स्मरति शं स्वकीयम् !!

इह न कमुपयाता भाग्यचक्रारपङ्क्तिः
मिलति मधु विभाते पतति निशि विपत्तिः

कलितनियतिलीला वयति हृदि तुरीयम्
अहह ! परमदीना मधुपसहचरीयम् !!



अलमलं कथनेन कामिनि !!

अलमलं कथनेन कामिनि
अलमलं व्यथनेन कामिनि !!

तव मुखेऽमृतलहरिलेखा
ननु मनसि कटुगरलरेखा

अलमलं ग्रथनेन भामिनि
अलमलं कथनेन कामिनि !!

वर्तिका कज्जलवती त्वम्
नयसि नाशं स्नेहतत्त्वम्

अलमलं ज्वलनेन मानिनि
अलमलं कथनेन कामिनि !!

मनसि किञ्चिद्वचसि किञ्चित्
दृश्यते कर्मणि च किञ्चित्

अलमलं छलनेन दामिनि
अलमलं कथनेन कामिनि !!

तवकृते मृत्पात्रशेषः
अयमहोऽस्मि विलीनवेषः

अलमलं व्यसनेन यामिनि
अलमलं कथनेन कामिनि !!



अये प्रभाता रजनी !!

अये प्रभाता रजनी प्राच्यामुदयति दीधितिमाली !!

वहति सगन्धसमीरोऽमन्दम्
वितरति दिशि दिशि सुममकरन्दम्

विलसति सरसि सरसिजं रम्यं म्लायति ननु शेफाली
उदयति दीधितिमाली !!

देवायतने नदति मृदङ्गः
प्रतिशाखं पर्यटति विहङ्गः

गायति पिको विकचसहकारे नृत्यति शिखी कपाली
उदयति दीधितिमाली !!

उत्तिष्ठ न कुरु मृषा विलम्बम्
नभसि निभालय दिनकरबिम्बम्

श्रियेप्सितः स्यात्कथं दुरापो भव रे साहसशाली
उदयति दीधितिमाली !!

पुनरायाति न विगतः कालः
कं खलु जहाति कालव्यालः
द्रुतमनुकूलय जीवनलक्ष्यं त्वं गुणगणमणिमाली
उदयति दीधितिमाली !!

चिन्तय सकृदथ भारतदेशम्
जलधित्रयनगपतिपरिवेशम्
एतद्रजसा सज्जय भालं कलिता यदङ्कपाली
उदयति दीधितिमाली !!



जयत्वियं वसुन्धरा !!

जयत्वियं वसुन्धरा जयत्वियं वसुन्धरा
रघोरियं यदोरियं कुरोरियं वसुन्धरा !!

अनन्तलोकतोऽपि शान्तिदायिनी गरीयसी
पुरन्दरस्य वज्रतोऽपि पुष्कलं द्रढीयसी

वयं यदीयरक्षणे निरन्तरं पुरस्सराः
तुषारशैलमण्डिता जयत्वियं वसुन्धरा !!

न ह्निन्दवो महामदा न नानकावलम्बिनः
न शाक्तशैवतान्त्रिका न जैनबौद्धयोगिनः

परस्परं पृथङ्मता न वर्ततेऽन्यथा धरा
ऋतम्भरा सनातनी जयत्वियं वसुन्धरा !!

मुखे जयध्वनिस्तथा करे त्रिवर्णकध्वजः
पदद्वये दृढा गतिर्गले विचञ्चलस्रजः

वयं प्रभञ्जनोपमा अरातिरोधतत्पराः
शकारिशौर्यरक्षिता[1] जयत्वियं वसुन्धरा !!

---

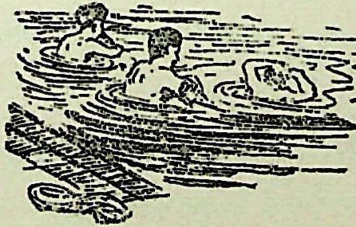
१. ख्रिस्तपूर्वप्रथमशताब्द्यां शकारिपदभाजोज्जयिनीश्वरेण गर्दभिल्लपुत्रेण महाराजेन विक्रमादित्येन शकाक्रान्तेयं भारतभूमिः संरक्षितेति श्रूयते ।

न दुर्नयं सहामहे न दुर्नयो विचीयते
स्वराष्ट्रगौरवोचितं हि केवलं विधीयते

वयं प्रयाणगत्वराः प्रतिक्षणं प्रसृत्वराः
सुरैरपि प्रभाविता जयत्वियं वसुन्धरा !!

वयं हि लोकतान्त्रिका ऋतैकपक्षपातिनः
सुहृत्तमाः परन्तु वैरिणां कृतेऽतितापिनः

न भेददर्शिनो वयं न चापि वृत्तमत्सराः
त्रिलोकतो महीयसी जयत्वियं वसुन्धरा !!



किम्मया तवाहितं कृतम् ?

हे विधे ! गतोऽसि यदनृतं
किम्मया तवाहितं कृतम् !!

जीवनं कथं प्रभापथं न नीयते
निष्कलङ्कपरिचयः कथन्न दीयते

केन राहुणा समावृतम् ?
किम्मया तवाहितं कृतम् !!

ये मया निरन्तरं जनास्समर्चिताः
ते विपश्चितोऽपि मां प्रतीर्षुभिर्धृताः

हन्त कीदृशं प्रकल्पितम् ?
किम्मया तवाहितं कृतम् !!

दृश्यते न कैरपि प्रभो ! ममोद्यमः
गृह्यते न कैरपि प्रभो ! मम श्रमः

भाग्यदोरकं न मे धृतम्
किम्मया तवाहितं कृतम् !!

प्रेषितोऽहमस्मि तातमन्तरा त्वया
धारितोऽस्मि दुर्ग्रहैरनारतं त्वया

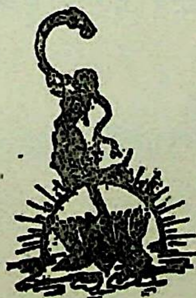
क्वास्ति मह्यमीश ! तेऽमृतम्
किम्मया तवाहितं कृतम् !!

एकलोऽस्मि भूतले न मे सहव्रती
साग्रहं समर्च्यते सदा सरस्वती

जीव्यते तयैव साम्प्रतम्
किम्मया तवाहितं कृतम् !!

शं प्रयाति पश्यतस्त एव वर्तिका
प्राणकामिनी विभाति दूरभर्तृका

भागधेयमस्ति निर्जितम्
किम्मया तवाहितं कृतम् !!



तव न जाने हृदयम् !!

तव न जाने हृदयम्
प्रेयसि ! तव न जाने हृदयम् !!

ननु रथाङ्ग इव हृद्विहगो मम कलयति कटुसमयम् !!

सन्ध्यारुचिरिव नभसि निलीना
कोकनदं व्यपहाय विलीना

हृद्भ्रमरो मम रोदिति धावति गणयति गरलमयम् !!

नादृश्यत सम्प्रति तव सुषमा
नाश्रूयत कलकण्ठमधुरिमा

हृद्विधुरो :मम ताम्यति मुह्यति पृच्छति तव विषयम् !!

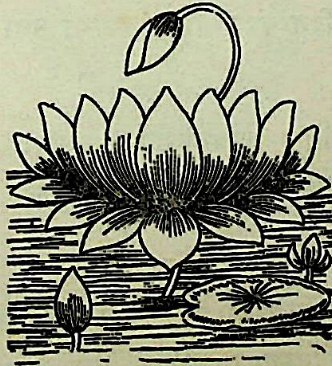
पार्वणशशिनि तवाननकान्तिः
पारावतमिथुने तव शान्तिः

हृद्गुह्यक आलपति पयोदं तव कुशलं सभयम् !!

पारेजलधिजलं त्वं नीता
केनाभिनवरक्षसा क्रीता
हृद्राधव उन्मद इव ककुभः पश्यति हृतविनयम् !!

वैधेयेषु वसतिरिह विहिता
प्रालेयेषु यथा नवकलिका
हृद्व्यथितो ज्वलदनलपरीतो दाहयति प्रणयम् !!

प्रेम भवति भुवनेश्वरदेयम्
श्रुतमिति मया श्रवणपुटपेयम्
हृच्छलितो न विश्वसिति सम्प्रति सत्यं विगतदयम् !!



त्वां विना !!

त्वां विना दिनम्मया यापितं यथातथा
न च मनो गतं सुखं नच शमं गता व्यथा !!

तव विलोलकैशिकं नो मयाऽवलोकितम्
तव शिरोविभूषणं नो मयाऽनुलोचितम्

गृहशुकेन शोभने ! श्राविता न ते कथा
त्वां विना दिनम्मया यापितं यथा तथा !!

तव दिदृक्षया शुभे ! प्रयतितं नु निद्रया
रुचिरकल्पनाचयं समनुभूय तीव्रया

नतसमुत्थिताश्रुभिः किन्तु नाशिता प्रथा
त्वां विना दिनम्मया यापितं यथा तथा !!

नभसि शून्यमण्डिते यन्मया प्रकल्पितम्
मनसि दैन्यखण्डिते यन्मया प्रजल्पितम्

आधिभिस्सुदुस्सहैस्सम्बभूव तद् वृथा
त्वां विना दिनम्मया यापितं यथा तथा !!

आशया नियन्त्रितं निजविनोदवैभवम्
प्रोद्गते निशामुखे भव्यमेति कैरवम्

किन्तु कौमुदी घनैर्भाविता न खलु तथा
त्वां विना दिनम्मया यापितं यथा तथा !!

जीव्यते नु साम्प्रतं समवलम्ब्य ते स्मृतिम्
मत्कृतेऽनपायिनीं हृतरतीशरतिस्मृतिम्

अस्मिता महीयते ह्येवमेव नान्यथा
त्वां विना दिनम्मया यापितं यथा तथा !!



तादृशमेव नयनयुगलम् !!

तादृशमेव नयनयुगलं मम लक्ष्यम्
यस्य कदापि न भवति जनोऽयं भक्ष्यम्[1] !!

यस्मिन् प्रवहति सुरतटिनीजलधारा
अयुतनियुतकटुकलुषनियंत्रणकारा

तादृशमेव नयनयुगलं मम गेयम्
यस्य कदापि न भवति जनोऽयं हेयम् !!

यस्मिन् विलसति सजलपयोधरमाला
समुपचिते तपने कृतवृष्टिविशाला

तादृशमेव नयनयुगलं मम लोच्यम्
यस्य कदापि न भवति जनोऽयं शोच्यम् !!

यस्मिन् प्रभवति पारसमणिरिव शक्तिः
धृतलोहस्वर्णीकरणामृतभक्तिः

तादृशमेव नयनयुगलं मदपेक्ष्यम्
यस्य कदापि न भवति जनोऽयमुपेक्ष्यम् !!

---

१. भक्ष्यं वस्तु इति शेषः । एतदेवापरत्रापि योजनीयम् ।

यस्मिन् वाति मरुद्गङ्गासुस्नातः
जितनन्दनवैभ्राजचैत्ररथवातः

तादृशमेव नयनयुगलं मम याज्यम्
यस्य कदापि न भवति जनोऽयं त्याज्यम् !!

यस्मिन् सततं समुच्छलति वात्सल्यम्
करुणकृपापाथेयकलितसाकल्यम्

तादृशमेव नयनयुगलं मम पद्यम्
यस्य कदापि न भवति जनोऽयमवद्यम् !!



जीवनं वर्तते न हन्तव्यम् !!

क्व नु रुचिरं विशोध्य गन्तव्यम्
जीवनं वर्तते न हन्तव्यम् !!

न ममास्थीनि याचते मघवा
क्व नु रुचिरं विचार्यं दातव्यम् !!

भोजराजो न मां पुरस्कुरुते
क्व नु कवनं विधाय गातव्यम् !!

नावजानाति राजकन्याऽपि
कालिदासेन तत्कथं भाव्यम् !!

हर्षदेवैर्भुजङ्गतां नीतः
क्व नु चरितं तदीयमाश्राव्यम् !!

न च मथ्नाति कोऽपि हृत्सिन्धुम्
लसदमृतं कथन्नु पातव्यम् !!

न कलौ प्राप्यते मुरारिपदम्
क्व नु सरसं मनो विधातव्यम् !!

दावदहनैर्जगत्परीतमहो
क्व नु शरणं विधाय यातव्यम् !!



मुषितस्तथापि वरानने !!

सकृदेव यद्यपि लक्षितं मुषितस्तथापि वरानने
सलिलम्मया परिरक्षितं तृषितस्तथापि वरानने !!

घनसारचम्पकचन्दनम्
सुरतरुपुरन्दरनन्दनम्
किमहो मया न वशीकृतं छलितस्तथापि वरानने !!

सुखदा न पर्वनिशीथिनो
कैरवकदम्बकदीपनी
प्रतितारकं नु शशीकृतं ग्लपितस्तथापि वरानने !!

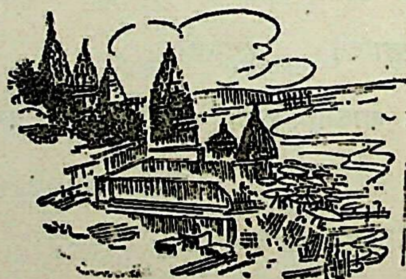
वाते वहति ननु शीतले
आह्लादिते जगतीतले
तव कायसौरभमादृतं क्षपितस्तथापि वरानने !!

श्रुतिसुखदरोदरगुञ्जनम्
स्वरपञ्चमैः पिककूजनम्
मृदुशिञ्जितं दयितीकृतं भ्रमितस्तथापि वरानने !!

क्व नु याचते मम याचना
क्व नु वन्दते मम वन्दना
विनिवेदनं सततं कृतं क्षुधितस्तथापि वरानने !!

त्वयि कल्पितं विबुधार्चनम्
सौभाग्यमपि मणिकाञ्चनम्
त्वय्युपचितिर्विनिवेशिता वलितस्तथापि वरानने !!

शशिनं विहाय सुखं न ते
कुमुदिनि ! वदामि हिताय ते
तुहिनीकृतो विरहानलो ज्वलितस्तथापि वरानने !!



शृणु रे हृदय !!

शृणु रे हृदय ! कोऽपि मन्त्रयते
अनृतं भवति सदा गतिहीनं सत्यमेव जयते !!

नक्षत्राणि वियति दृश्यन्ते
भानुरुचिं न तथापि लभन्ते
स्थानबलेन किमपि नहि सिद्ध्यति नियतिनटी तनुते
शृणु रे हृदय ! कोऽपि मंत्रयते !!

अर्को भवति रविर्घनसारः
भवति स एव विटपिमन्दारः
नामबलेन किमपि नहि सिद्ध्यति पौरुष एव गते
शृणु रे हृदय ! कोऽपि मंत्रयते !!

सजलजलधरो वर्षति सलिलम्
तमनुकरोति दृगम्बुजयुगलम्
अश्रु तदपि सागरतटिनीनां गुरुतां नो सहते
शृणु रे हृदय ! कोऽपि मंत्रयते !!

हृद् विद्राव्य संस्फुटति गीतम्
देवानाम्प्रियकेर्न गृहीतम्
कोटिजनानाममृतमिदं यद्विषमेकस्य कृते
श्रृणु रे हृदय ! कोऽपि मंत्रयते !!

प्रतिदिनमेव निमज्जति सविता
भिन्नेऽह्नि भुवि कोऽपि न भविता
स्मृतिपथमेति न किमपि जनानामुपकारेभ्य ऋते
श्रृणु रे हृदय ! कोऽपि मंत्रयते !!



पश्यन्तु ते स्वयम् !!

आलोचयन्ति येऽपरं पश्यन्तु ते स्वयम्
संशोधयन्ति येऽपरं शुध्यन्तु ते स्वयम् !!

अन्यस्य दोषदर्शने व्यर्थं प्रयत्यते
निन्दन्ति येऽपरं सदा निन्दन्तु ते स्वयम् !!

आकाशथूत्कृतैर्न किं हानिर्निजा भवेत्
संक्षोभयन्ति येऽपरं क्षुभ्यन्तु ते स्वयम् !!

गन्धं ग्रहीतुमिष्यते यैरेव पाणिना
विज्ञापयन्ति येऽपरं जानन्तु ते स्वयम् !!

वेदानधीत्य सर्वतः षड्दर्शनानि च
सम्बोधयन्ति येऽपरं बुध्यन्तु ते स्वयम् !!

आरोप्यतेऽधिबालुकं यैरेव भित्तिका
संस्थापयन्ति येऽपरं तिष्ठन्तु ते स्वयम् !!

प्रज्ञा पथिप्रदर्शिका जाता न किं तया
विद्रोहयन्ति येऽपरं द्रुह्यन्तु ते स्वयम् !!

विद्यामवाप्य यैरहो विनयो न रक्षितः
सन्तापयन्ति येऽपरं ताम्यन्तु ते स्वयम् !!



किं जलेन तर्पणम् ?

किं जलेन तर्पणं स्वयम्मृता यदा तृषा
किं पथा मुदर्पणं स्वयंस्मृता यदा दिशा !!

व्योम्नि रे बलाहकाः परिभ्रमन्ति सत्वरम्
नर्तयन्ति विद्युतो नदन्ति च प्रसृत्वरम्

किं वृथैव गर्जनेन मेदिनी मदालसा
नो यदाऽवमज्जिता जलप्रवाहकैः कृशा !!

निद्रयाऽभिभावितो निमील्य नेत्रकद्वयम्
नागरोऽभिवाञ्छति प्रियोपगूढमव्ययम्

किम्मुधाऽऽत्मवञ्चनेन शून्यया च किं दृशा
सत्यमेव चुम्बिता यदि प्रिया व्रतङ्कषा !!

याहि रे द्विरेफ ! मङ्गलं न मेऽनुचिन्तितम्
वैभवे समागतोऽसि सादरं समीहितम्

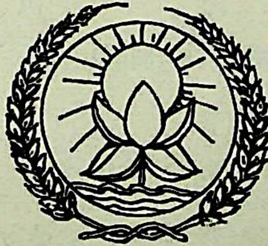
मल्लिकेति धिक्करोति लम्पटं सुमत्त्विषा
किम्मधुव्रत ! त्वया मयाऽनुकूलिता दशा !!

अग्रजोऽनुजोऽथवा पिता जनन्यभीप्सिता
बन्धुराश्च बन्धवो वयं न कैर्विनाकृताः

किं कुटुम्बबन्धनेन बन्धनं न किं मृषा ?
किं पितृव्यकेण हन्त ! भङ्गुरेण विद्विषा ??

शैशवे न लालिता न यौवने समादृताः
हन्त रे समाज ! यत्त्वयैव भिक्षुकीकृताः

साम्प्रतं न विद्यसे कृतघ्न ! कानु ते दशा
साम्प्रतं वयं समुत्थिता विरूढसाहसाः !!



त्वयैवोपहसितम् !!

कमलया न हसितं मृदुलया न हसितम्
अये भाग्यबाले ! त्वयैवोपहसितम् !!

स्फुरच्चन्द्रिका शर्वरीप्राणभूता
चकोराङ्गनायाः हृदानन्दपूता

सुखं रे तथापि क्षणं नैव मिलितम्
अये मेघमाले ! त्वया किन्न छलितम् !!

तपोभिर्निबद्धो विहायात्मवासम्
स्वयं योऽभ्युपेतो हरस्त्वत्सकाशम्

समालिङ्गनं नो तथापि प्रभवितम्
अये शैलबाले ! त्वया किं विफलितम् !!

पिपासाकुलीभूय हा चञ्चरीकः
विलीनस्त्वयि प्रोषितश्चाप्यभीकः

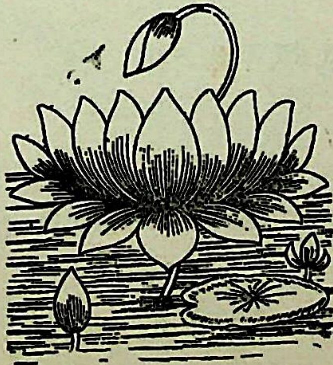
गते वासरे तत्सुखं क्वापि गलितम्
अये पुष्पहाले ! त्वया किन्न कलितम् !!

सदा गोपितं यत्प्रयत्नैर्मदीयैः
समाराधितं मौनमन्त्रैस्त्वदीयैः

तदेवाद्य दुःखं कथञ्चित् प्रबलितम्
अयेऽपाङ्गशाले ! त्वया किं विलुलितम् !!

धनं नैव याचे जनं नैव याचे
शपामि प्रभो ! सम्पदं नैव याचे

समीहे मनो मे भवेत्त्वच्छबलितम्
मुकुन्देन ललितं विकलितं तरलितम् !!



तमहं न कृतं मन्ये !!

सहजं न कृतं येन तमहं न कृतं मन्ये
सहजं न वृतं येन तमहं न वृतं मन्ये !!

वधिकस्तु सदा घासैः छागं ननु पालयते
तल्लक्ष्यमपि स्पष्टं मांसार्थमिदं कुरुते

सहजं न मृतं येन तमहं न मृतं मन्ये !
सहजं न कृतं येन तमहं न कृतं मन्ये !!

उद्यानभृता नूनं सुमनानि निषेव्यन्ते,
स्वार्थान्धतया किन्नो वृन्ताद्धि वियोज्यन्ते

सहजं न चितं येन तमहं न चितं मन्ये
सहजं न कृतं येन तमहं न कृतं मन्ये !!

क्षीरेण समं सख्यं सलिलस्य भुवि ख्यातम्
दौर्जन्यमलम्पाके तस्यापि तथा ज्ञातम् !!

सहजं न धृतं येन तमहं न धृतं मन्ये
सहजं न कृतं येन तमहं न कृतं मन्ये !!

प्रेम्णा न यदिह सिद्धं तद् बाहुबलैराप्तम्
न तथापि पथा स्वल्पं केनापि यशोऽवाप्तम्

सहजं न जितं येन तमहं न जितं मन्ये
सहजं न कृतं येन तमहं न कृतं मन्ये !!

प्राणाश्च परित्यक्ताः शलभेन शिखालोके
केनापि न विज्ञातं प्रीतौ नु मनश्शोके

सहजं न हुतं येन तमहं न हुतं मन्ये
सहजं न कृतं येन तमहं न कृतं मन्ये !!



क्व नु ? !!

क्व नु वसतिः ? हरिभवने
क्व नु विरतिः ? भुजगजने !!

क्व नु शरणम् ? शम्भुमतौ
क्व नु मरणम् ? तीर्थपतौ !!

क्व विकारः ? वपुषि सखे
क्व विचारः ? मनसि सखे !!

क्व नु शान्तिः ? सदुपकृतौ
क्व नु कान्तिः ? हृदवधृतौ !!

क्व नमस्या ? शमितरवे
क्व तपस्या ? भ्रमितभवे !!

क्व नु शोध्यम् ? नवलगृहे
क्व नु बोध्यम् ? कटुकलहे !!

क्व नु कवनम् ? शुभचरिते
क्व नु हवनम् ? शिखिनि तते !!



चैत्रकम्[1] (किमु करवाणि !!)

विधुमभिसरति कुमुदिनी रे मातः किमु करवाणि
प्रोषितपतिका विरहिणी रे मातः किमु करवाणि !!

पवनो वहति मलयगिरिसूतः
रेवातटगतवञ्जुलपूतः

वितरति सुममधु नलिनी रे मातः किमु करवाणि !
प्रोषितपतिका विरहिणी रे मातः किमु करवाणि !!

---

१. प्रोषितपतिकया विरहिण्या चैत्रमासे गीयमानं भर्तृगतचिन्तावितानचित्रणपरं गेयम् उत्तरप्रदेशीयग्रामटिकासु 'चैता' इति नामधेयेन व्यवह्रियते। चैत्रकं चैत्रीयं वाऽस्य नाम भवितुमर्हति संस्कृतभाषायाम्।

मल्लिखितस्यास्य गीतस्येदं वैशिष्ट्यं यदत्र प्राक्तनवियोगचित्रणपरिपाट्याः साम्प्रतिकलोकमानसचित्रणपरम्परायाश्च युगपत्समन्वयः कृतो वर्तते।

एकतस्तावत् 'रेवारोधसि वेतसीतरुतले चेतः समुत्कण्ठते' इति साहित्यदर्पणादिकाव्यशास्त्रग्रन्थेषु चित्रिता वियोगवर्णनाऽऽनीताऽस्मिन् गीतेऽपरतस्तावत् कृतकलिकातावसतेर्निष्ठुरप्रियतमस्य वृत्तोपनिबन्धनवशात् अद्यतनमपि वियोगचित्रणं कल्पितम्। मन्ये गीतमिदं सहृदयहृदयाह्लादकरं भवितेति शम्।

रौति रसालतरौ कलकण्ठी
श्रुतिकुहराय भवति ननु शुण्ठी

न खलु भवामि कुशलिनी रे मातः किमु करवाणि
प्रोषितपतिका :विरहिणी रे मातः किमु करवाणि !!

वर्षति दृगिह सततसलिलौघम्
तदपि न शमयति विलुलितशोकम्

भाति सपत्नीव रजनी रे मातः किमु करवाणि
प्रोषितपतिका विरहिणी रे मातः किमु करवाणि !!

निर्दय दयित ! वससि कलिकाताम्
प्रेषयसे न समागमवार्ताम्

हसति ननान्दा विभविनी रे मातः किमु करवाणि
प्रोषितपतिका विरहिणी रे मातः किमु करवाणि !!

व्यर्थमहो विहितौ व्रतनियमौ
द्वावपि विधुतपनौ हतकयमौ

प्रभवति नियतिनियमिनी रे मातः किमु करवाणि
प्रोषितपतिका विरहिणी रे मातः किमु करवाणि !!



कजरी (रौति कोकिला !!)

रौति कोकिला मदालसा रसालतरौ
गोपिता तमालतरौ रे !!

क्षणं पल्लवे निलीय
मञ्जरीरसं निपीय
स्तौति सम्मुखं वसन्तकं रसालतरौ
गोपिता तमालतरौ रे !!

नन्दनन्दनं विहाय
कीर्तिनन्दिनी सुखाय
वेत्ति नैषदप्यनामयं रसालतरौ
गोपिता तमालतरौ रे !!

मन्दमन्दगर्जनेन
भूरिभूरिवर्षणेन
मेघमालिका महीयते रसालतरौ
गोपिता तमालतरौ रे !!

---

१. यथा खलु व्रजप्रदेशे 'रसिया' नामकं गीतं यथा च बुन्देलखण्डप्रदेशे 'लाँगुरिया' नामकं गीतं साभिनिवेशं गीयते तथैव पूर्वोत्तरप्रदेशजनपदेषु प्रावृट्काले 'कजरी' नामकं रणरणकप्रसूतिक्षमं गीतं कामिनिभिः गीयते। अनेन गीतेन प्रोषितपुरोभागप्रियं प्रति विविधवचोभङ्गीमाश्रित्य विरहिणीभिः कुलिशोपालम्भाः स्फारीक्रियन्ते ।

मृगी शाद्वलं चिनोति
शिखी नर्त्तनं करोति
केकिनी च दुर्मनायते रसालतरौ
गोपिता तमालतरौ रे !!

अश्रुपातमाचरन्ति
वत्सकाश्च लालयन्ति
अन्तरेण हरिं धेनवो रसालतरौ
गोपितास्तमालतरौ रे !!



उत्तरप्रदेशस्य मिर्जापुराभिधं जनपदं गीतस्यास्य प्रसवभूमिरित्यत्र न विवादः कश्चिद् । तत्रत्याःकजर्यः कजरीगायकाश्च विश्वविख्याताः स्वीक्रियन्ते । मन्ये कं सुखं प्रियसङ्गमजनितरतिसौख्यं जरयति नाशयतीति कजरीशब्दस्य प्रतिपाद्योचिता व्युत्पत्तिः स्वीकर्तुं शक्यते । विपश्चितोऽत्र प्रमाणम् । कजरीयं विविधैः लोकप्रचलितैः रागैर्गीयते । रागचतुष्टयं मया प्रस्तूयतेऽस्मिन्-गीते आगामिनि गीतत्रये च ।

कजरी (राधा वादयति मुरलीम् !!)

राधा वादयति मुरलीमये माधव !!
प्रस्थितोऽसि किं विहाय
वैरिणां विनाशनाय
माता मार्जयति मुरलीमये माधव !!

रासमण्डलस्मृतेन
कापि गोपिका करेण
धीरा धारयति मुरलीमये माधव !!

कापि शिक्यमुपागम्य
शोकसागरं नियम्य
दीना दारयति मुरलीमये माधव !!

क्व माधवेति भणन्ती
शून्यगगनं पठन्ती
स्निग्धा सारयति मुरलीमये माधव !!

शीघ्रमेहि हे मुकुन्द
नन्दनन्दन गोविन्द
चौरी चोरयति मुरलीमये माधव !!



कजरी (नन्दनन्दनेन गोकुलं निकेतनीकृतम्)

नन्दनन्दनेन गोकुलं निकेतनीकृतम् !!

इतस्ततः परिलुठन्
धूलिधूसरीभवन्
क्वचिन्नृत्यति प्रगायति स्वमन्दिरे द्रुतम् !!

क्वचिच्चन्द्रमण्डलाय
क्वचित्तरुविहङ्गमाय
मातरं विलोकयन् विरौति चातकव्रतम् !!

क्वचिदुलूखलेऽच्युतः
जनन्यैव निगडितः
मणिग्रीवकूबरौ पुनाति लोकविस्मितम् !!

सङ्गचारिणां हिताय
चौरयोजनां विधाय
निभृतनिभृतमेव माधवोऽटतीह सन्ततम् !!

वेणुमोष्ठपुटीकृत्य
भुवनमण्डलं विजित्य
साम्प्रतं जगद्धिताय हरिर्याति सद्गतम्
नन्दनन्दनेन गोकुलं निकेतनीकृतम् !!



कजरी (मुञ्च कोपने !!)

मुञ्च कोपने ! मृषैव कृतं मानं रे !
मुञ्च मुञ्च कोपने ! व्यलीकमानं रे !!

मेघमालिकाऽभ्युपैति
श्रावणे न को बिभेति
हन्त ! पापिना पिकेन हृतं ज्ञानं रे !!

दूरदेशतोऽनुधाव्य
कान्त आगतोऽनुभाव्य
साम्प्रतं न युज्यतेऽपरं प्रमाणं रे !!

द्वारदेहलीमुपेत्य
प्रीतिनिर्भरं समेत्य
त्वामुदीक्षते नताननो विमानं रे[1] !!

---

१. द्रष्टव्यममरुकशतके पद्यमिदम्:
लिखन्नास्ते भूमिं बहिरवनतः प्राणदयितो
निराहाराः सख्यः सततरुदितोच्छूननयनाः ।
परित्यक्तं सर्वं हसितपठितं पञ्जरशुकै-
स्तवावस्था चेयं विसृज कठिने ! मानमधुना ॥

मा विलम्बमयि कृथाः
मा प्रतीपमेव गाः
यच्छ सत्वरं प्रियाय रहः पानं रे !!

किं वृथैव रोदनेन
किं मृधैव कोपनेन
प्राघुणाय दीयते कथं न दानं रे !!

कान्तदुर्गतिं विभाव्य
याति कौतुकं न काऽद्य
चिन्त्यते कथं न सौहृदं विधानं रे !
मुञ्च कोपने ! मृषैव कृतं मानं रे !!



हृदयमपि निर्घृण तव नहि जाने !!

हृदयमपि निर्घृण ! तव नहि जाने !!

इन्दीवरमपि मधुकरमलिनम्
दृश्यत इह विधुरं ह्रदपुलिनम्

नयनमपि निर्दय ! तव नहि जाने !!

मदयति नो पिकपञ्चमगीतम्
नो बध्नाति मनस्सदधीतम्

श्रवणमपि निष्ठुर ! तव नहि जाने !!

वहति न परिमलमद्य समरः
मल्लीतरुरपि भवति करीरः

दयित ! तव नासामपि नहि जाने !!

सुखयति नो गृहशुकसंस्पर्शः
न च रमयति नवतल्पविमर्शः

करभमपि निर्मम ! तव नहि जाने !!

प्रोषितदयिते स्नेह उदारः
ध्वंसी भवति न किं सुखसारः[1]
सुकृतमपि सहचर ! तव नहि जाने !!

त्वयि ननु वृत्तमनोरथकामाम्
तपति बलीयः पञ्चशरो माम्[2]
प्रणतिमपि मधुकर ! तव नहि जाने
हृदयमपि निर्घृण ! तव नहि जाने !!



---

१. स्नेहानाहुः किमपि विरहे ध्वंसिनस्ते त्वभोगा-
दिष्टे वस्तुन्युपचितरसाः प्रेमराशीभवन्ति !!

२. तव न जाने हृदयं मम पुनः कामो दिवापि रात्रावपि ।
निर्घृण ! तपति बलीयस्त्वयि वृत्तमनोरथाया अङ्गानि ।।
(शकुन्तलामदनलेखः)

केन हन्त भाषितम् ?

गृहे-गृहे साधवो न वने-वने चन्दनम्
गजे-गजे मौक्तिकं न केन हन्त भाषितम् !!

आत्मनस्तनूजा शुभा पार्वतीव पूता
मेनकाघृताचीसमा स्नेहसिन्धुभूता

कस्य पुत्रको न हरिर्वाटिका न नन्दनम्
गजे-गजे मौक्तिकं न केन हन्त भाषितम् !!

द्रौपदीव का न पाण्डवाभिभूतिकारणम्
रेणुकेव का न कल्पते दुरन्तमारणम्

ऊर्वशीव का न नर्तयत्यहो किरीटिनम्
गजे-गजे मौक्तिकं न केन हन्त भाषितम् !!

वल्लकीस्वरैरवाप को गजो न बन्धनम्
तृष्णयाऽतिसन्धितो न को रुरुर्मृतोऽचिरम्

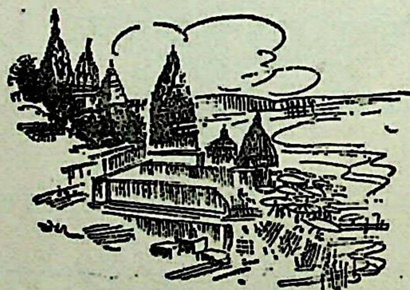
कः कपोतको बबन्ध तण्डुलैर्न जीवनम्
गजे-गजे मौक्तिकं न केन हन्त भाषितम् !!

पीडयन्ति के न शक्तिभिर्निजं सहोदरम्
विद्ययैव के न योधयन्ति रे परस्परम्

दृश्यते धरातले मदाय कस्य नो धनम्
गजे-गजे मौक्तिकं न केन हन्त भाषितम् !!

साम्प्रतं मृषैव भाति पूर्वजाभ्युदीरितम्
यद्वृतं तदेव साधु सुन्दरं नु यत्कृतम्

यत्स्थिरं तदस्थिरं यदुज्ज्वलं तदञ्जनम्
गजे-गजे मौक्तिकं न केन हन्त भाषितम् !!



गङ्गे ! तव नीरगाहनम्[1] !!

दुरितानि विधुतानि कुरुते शुभानि साधु विदधाति रे
गङ्गे ! तव नीरगाहनं वितनुते विबुधलोकमनुयाति रे !!

कमलारमणचारुचरणाब्जजनिते ! त्रिपथगे !! त्वया
गङ्गे ! विहितं न कस्य पापहरणं मनुजदेवदनुजस्य रे !!

धवलाम्बुलसितानि पुलिनानि सिकताविकसितानि रे
गङ्गे ! बकहंससारसप्रचुरितानि नयनानि जडयन्ति रे !!

तव नीरमुकुरे विलसितं निशीथिनीशमवलोक्य रे
गङ्गे ! प्रतिभाति मानसाम्बुनिवहे तरति कोऽपिवरटो यथा !!

सुरलोकमुपगन्तुमथवा विरञ्चिना विरचितानि रे
गङ्गे ! प्रतिभान्ति रोहणाध्वफलकानि पवनैस्तरलितानि रे !!

श्रुतिसौख्यमुपयाति बधिरोऽन्धकोऽपि दृष्टिरचनामहो
गङ्गे ! गलितोऽपि कुष्टरोगदहनेन रुषमां वितनुते नरः !!

भुवि येऽपि पतिताश्शबलिताः कलङ्कपापलसिताश्च रे
गङ्गे ! तव दर्शनेन तेऽपि सुगतिं समधिकां नु कलयन्ति रे !!



१. लोकभाषायां गीतमिदं 'सोहर' इत्युच्यते, मङ्गलावसरेषु च प्रायेण साभिनिवेशं गीयते ।

नन्दनायै न जीवनं जातम् !!

नन्दनायै न जीवनं जातम्
वन्दनायै न जीवनं जातम् !!

कर्गजं प्राप्य चापि निर्वर्णम्
तूलिकायै न जीवनं जातम् !!

प्रत्यहं सत्कृतं नु वात्याभिः
कल्पनायै न जीवनं जातम् !!

मन्दिरे राक्षसी समाविष्टा
अर्चनायै न जीवनं जातम् !!

प्रीतिमालोक्य हन्त ! वेश्यायाः
पिङ्गलायै न जीवनं जातम् !!

द्वेषमनुभूय मुञ्जदेवानां
भावनायै न जीवनं जातम् !!

दृष्टशौर्ये परातिसन्धाने
सान्त्वनायै न जीवनं जातम् !!

अर्गलां वीक्ष्य भागधेयानां
एषणायै न जीवनं जातम् !!



गलज्जलिका[1] (वाचिकं ददे कस्मै !!)

शृणोति कोऽपि न मे वाचिकं ददे कस्मै ?
वृणोति कोऽपि न मे वाचिकं ददे कस्मै ?

व्यथाकथेयमहो मामकी पुरावृत्ता
अनिर्व्यथे हि भवे वाचिकं दधे कस्मै ?

विनम्रसौम्यघनैर्भो न किं ममापकृतम्
कदर्थितेऽत्र मरौ वाचिकं सुवे कस्मै ?

विरोपितोऽपि न शं याति हा व्रणो भीमः
अवैद्यके हि पुरे वाचिकं स्तुवे कस्मै ?

अये ममाम्रतरो दृश्यते नु निम्बफलम्
स्वभाग्यचक्रमिदं वाचिकं लभे कस्मै ?

---

१. उर्दूभाषायां यदेव गीतं 'ग़ज़ल' पदेन व्यवह्रियते तदेव मया संस्कृतभाषायां गलज्जलिकेति समुच्यते । अस्मिन् गीते प्रायेण मर्मस्पृशो भावा नवनवोत्प्रेक्षणार्थच्छलादिसंवलिता मध्यस्थीक्रियन्ते ।
काऽपि प्रियजनप्रवञ्चनोत्था पीडा निसर्गजयोगक्षेमविनाशिनी नियतिनटीलीलैव वाऽस्मिन् गीते लक्ष्यं भवति यच्छ्रावं श्रावं पाठं पाठं साधारणीकरणवलेन सहृदया निरर्गलाश्रुपूरितनयनाः सन्दृश्यन्ते ।
अतएव 'गलन्ति जलानि नयनाश्रूणि यस्यां सा गलज्जलिकेति, मयाऽभिनवं समुत्प्रेक्ष्यते । ज्ञात्वा विपश्चितः प्रमाणमिति दिक् ।

अयाचितं न विधात्रा समर्पितं किं किम्
अयाचकेऽर्थिजने वाचिकं वृणे कस्मै ?

पिकोऽधुना स विलीनोऽभिराजराजेन्द्रः
अशारदोपवने[1] वाचिकं सहे कस्मै ?



१. सशयोरभेदोऽत्र प्रदर्शितः । सारं वसन्ततुंजनितं सौख्यमुल्लासं ददाति इति सारदम् । सारदम् उपवनमिति सारदोपवनम् तस्मिन् । न तादृश इति असारदोपवने कस्मै वाचिकं सहे, यतो हि सुखोल्लासप्रदाता स पिकोऽधुना विलीनः ।

पुनश्च, अविद्यमाना शारदा विद्याधिष्ठात्री सरस्वती यस्मिन् तत् अशारदम् उपवनम् । तस्मिन् अशारदोपवने काव्यविलासविरहिते भूतले कस्मै वाचिकं सहे ? यतो हि काव्यामृतवर्षी राजेन्द्रोऽसौ सम्प्रति विलीनः ।

त्वां विना किमु जीवनम् !!

जीवनं रे जीवनं त्वां विना किमु जीवनम्
अयि विदलिते प्राणलतिके ! त्वां विना किमु जीवनम् !!

वहति शीतलमन्दवायुः झम्पते सहकारवल्ली
कोकिलोऽपि विरौति मधुरं सौरभं वितनोति मल्ली

उपवनं रे ह्युपवनं त्वां विना किं ह्युपवनम् !!

नयनकज्जलजलवतीयं भाति पश्य कलिन्दकन्या
नन्दनन्दनचरणपङ्कजवहदमृतमाध्वीकधन्या

मधुवनं रे मधुवनं त्वां विना किमु मधुवनम् !!

स्तम्भितेयं कण्ठसरणिः मौक्तिकाम्बुविमण्डिता दृक्
चञ्चलौ चरणौ तदपि किं स्थीयते विमनायितं धिक्

वन्दनं रे वन्दनं त्वां विना किमु वन्दनम् !!

व्योम्नि पुनरपि जलदरसना भाति शम्पाकिङ्किणीका
ननु घनागमसुन्दरीयं प्रकटयति मदनं ह्यभीका

वर्षणं रे वर्षणं त्वां विना किमु वर्षणम् !!

सौख्यमभवद् गगनकुसुमं यमनिशा मधुयामिनी रे
प्रणयरचना वागुराभून् मकररथ्यावासिनी रे

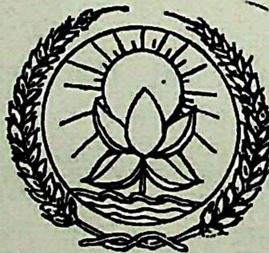
तर्पणं रे तर्पणं त्वां विना किमु तर्पणम् !!

तव सुकोमलबाहुपरिधौ बन्धनं यदहोऽनुभूतम्
अधरमदिरा या निपीता स्मरसुखं कलितं प्रभूतम्

बन्धनं रे बन्धनं त्वां विना किमु बन्धनम् !!

मयि समर्पितनिखिलजीवितवैभवेऽनुभवामि नित्यम्
अन्तरा मां मुक्तिरपि ते सुखकरी न वदामि सत्यम्

वैभवं रे वैभवं त्वां विना किमु वैभवम् !!



जीवनं जीवितं रे !!

मया जीवनं जीवितं जीवितं रे !!
चरन्त्रै निकामं यदा मध्वविन्दम्
मयाऽऽकण्ठमास्वादितं स्वादितं रे !!

प्रदत्तं कयाचिद् यदा सानुरागम्
मया तत्सुमं स्वीकृतं स्वीकृतं रे !!

अतीतं न दृष्टं भविष्यं न जुष्टम्
मया केवलं वर्तितं वर्तितं रे !!

समाहृत्य पीडां छलं वञ्चनं वा
मया हृद्गृहं पूरितं पूरितं रे !!

समुत्था यदोद्भ्रान्तकौलीनवात्या
मया तत्कृतं नन्दितं नन्दितं रे !!

पिशाचं समालोक्य देवस्य पीठे
मया मन्दिरं वर्जितं वर्जितं रे !!

सुधाकुम्भमाशङ्क्य हालाहलान्तम्
मया मार्दवं थूत्कृतं थूत्कृतं रे !!

न कस्यापि शत्रुर्न कस्यापि मित्रं
मया बन्धनं मोचितं मोचितं रे!!

समाहृत्य चेतो हृषीकानुबन्धं
मया चिन्मयं रञ्जितं रञ्जितं रे!!

न दुःखान्ततामेतु नाट्यं त्वदीयम्
मया व्योम्नि सम्भाषितं भाषितं रे॥

विनश्येन्न राजेन्द्रमिश्राभिजात्यम्
मया गीतमाश्रावितं श्रावितं रे॥



पिच्छिलः पन्थाः !!

मधुरमधुरं गच्छ सुन्दरि ! पिच्छिलः पन्थाः !!

घनपयोधरभारनमिता तव कटी विकटम्
ननु तदधिकं चित्रमपरं वहति सलिलघटम्
मुखरहंसकयुतचरणयोः का नु दीनकथा ?
पिच्छिलः पन्थाः !!

त्वयि समर्पितचित्तवृत्तिर्मुषितहृदयोऽयम्
पश्य ! पश्यति निर्भरं दयितः सदक्तोयम्
आननाम्बुजमीलनं कथमिष्यते न वृथा !
पिच्छिलः पन्थाः !!

पतसि यदि तनुकं तरुणि ! निपतेद्धि सौजन्यम्
मार्दवं रुध्यादहो जीयान्न सौन्दर्यम्
प्रकृतिभूता त्वं त्रिजगतां शिवशिवत्वकथा[1] !
पिच्छिलः पन्था !!



---

१. शिवः शक्त्या युक्तो भवति यदि शक्तः प्रभवितुम् इत्यादि सौन्दर्यलहर्यां द्रष्टव्यम् ।

कथमसि दिने-दिने दीना !!

तमीशकले ! कथमसि दिने-दिने दीना ?

कस्तव तापो रे का तव पीडा
कस्तव शापो रे मनसो व्रीडा
जाता येन त्वं सततं क्षीणा !!

चन्द्रस्तव रमणो रजनी दासी
कुमुदं तव मित्रं ककुभः काशी
म्लायसि तदपि त्वं परिभवपीना !!

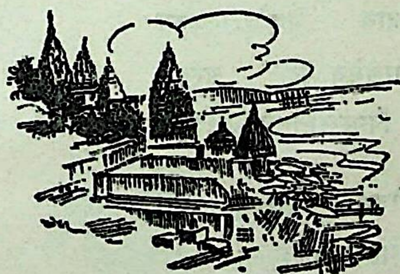
क्व तवाह्लादो रे क्व नु खलु शैत्यम्
क्व नु तव पाण्डुरता मधुरिमचैत्यम्
क्व नु खलु तनुशोभा मसृणनवीना !!

दूरे सितपक्षश्चिन्तय बाले
भविता किं वृत्तं भाविनि काले
नंक्ष्यति संज्ञाऽपि प्रत्नयुगीना !!

सम्प्रति नो स्निह्यति समदचकोरः
कोऽयं दुर्घटितः समयो घोरः
दृष्टा पापकथा स्खलितखलीना !!

कलितं शिवशीर्षे यत्सौभाग्यम्[1]
विगतं तत्सर्वं श्रितदौर्भाग्यम्
बहुगुणशालिनि रे ! तमसि विलीना !!

तप्तः प्रणयिजनो विशदालोके
सम्प्रति बन्धुस्तव कः खलु शोके
अनुभव दुश्चरणं कलुषधुरीणा !!



१. देवाधिदेवस्य शङ्करस्य अर्धेन्दुशेखरत्वं प्रसिद्धम् ।

रूपाय तस्मै नमः !!

रूपाय तस्मै नमः !!
यूपाय तस्मै नमः !!

छलितो हि येन पुरूरवाः
देवर्षिरपि विकलीकृतः
प्राणैर्वियुक्तो दशरथस्तस्मै नमस्तस्मै नमः !!

क्वचिदाम्रपालीसंश्रितम्
क्वचिदपि कपालिखलीकृतम्[१]
उपभुज्यतेऽथ विगर्ह्यते तस्मै नमस्तस्मै नमः !!

व्यपहाय भर्तृहरीश्वरम्
पशुपालमेव हि सस्वदे
ननु पिङ्गलातनुवासिने[२] तस्मै नमस्तमै नमः !!

यदमोघमोहविमोहितः
संयोगितारतिकामुकः
शलभायतेस्म तृषानले[३] तस्मै नमस्तस्मै नमः !!

---

१. तथा समक्षं दहता मनोभवं पिनाकिना भग्नमनोरथा सती
निनिन्द रूपं हृदयेन पार्वती प्रियेषु सौभाग्यफला हि चारुता !!

२. यां चिन्तयामि सततं मयि सा विरक्ता
साप्यन्यमिच्छति जनं स जनोऽन्यसक्तः (इति भर्तृहरिनिर्वेदः)

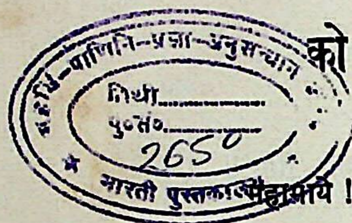
३. दिल्लीश्वरश्चाहमानसम्राट् पृथ्वीराजः कान्यकुब्जाधिपतेर्जयचन्द्रस्य कन्यां संयोगितामपजहार तदभिसन्धिवशाच्च तुरुष्कभूभुजा मुहम्मदगोरिणा विनाशमुपगमित इति ज्ञायते।

रत्नावलीत्वमुपागतम्
छलयतितरां दयितं स्वकम्
श्रीरामगाथामृतकृते तस्मै नमस्तस्मै नमः !!

विद्यागजाननकल्पितम्
अभिराजभक्तमनारतम्
गतमेव सम्प्रति पण्यतां तस्मै नमस्तस्मै नमः !!

रज्जावहिभ्रमसन्निभम्
प्रतिपलमहो नश्यद्विभम्
परिणमति यद्धि शुभाशुभं तस्मै नमस्तस्मै नमः !!





को नु भणतु महिमानम् !!

महामाये ! को नु भणतु महिमानम् !!

अभयं वितरसि करकमलाभ्याम्
नयनाभ्यां वरदानम् !

वदनं शशी दृशौ मार्तण्डः
दिग्वलयं परिधानम् !!

क्रोधोऽग्निः स्मितमपि नवकुसुमम्
करुणा खगकुलगानम् !

पदजलमुदधिरासनं धरणी
गगनं नीलवितानम् !!

विन्ध्यगिरौ मैहरशिखरे वा
काञ्च्यां वससि समानम्[1] !!

त्वमसि जननि ! धनजनसुखदात्री
निखिलसमृद्धिनिधानम् !!

---

१. विन्ध्यगिरौ चण्डिकारूपेण मैहराचलशिखरे शारदारूपेण काञ्च्याञ्च त्रिपुर-सुन्दरीरूपेण मातुर्वसतिरिति स्पष्टमेव ।

विनतजनानां हरसि विपत्तिम्
दृप्तानामभिमानम् !!

यमपि निजीकुरुषे करुणामयि
तं विदधासि वदान्यम् !!

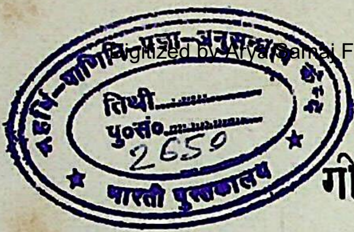
तातविरहितं मामभिराजम्
पश्यसि किन्न शयानम्[1] !!

श्रान्तोऽहं भवमृदुवञ्चनया
त्वमसि जननि ! जलयानम् !!

जीवय पोषय ह्रासय वर्द्धय
प्रेरय काव्यललामम्[2] !!



१. विपत्तिमग्नमित्यर्थः ।
२. सा विद्या परमा मुक्तेर्हेतुभूता सनातनीति दुर्गासप्तशत्याम् ।



गीतानुक्रमणिका



